दिनांक :- 10-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़मी (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दस

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- डॉ० सनयात सेन

② प्रजातंत्र का सिद्धांत (Principle of Democracy)- कुओमिनतांग दल या डॉ० सेन का यह दूसरा सिद्धान्त प्रजातंत्र का सिद्धांत था। वे इसे जन-संप्रभुता (Peoples Sovereignty) का सिद्धांत भी कहते थे। प्रजातंत्र के संबंध में उन्होंने बतलाया प्रजातंत्र का अर्थ हम मतधिकार, उपक्रम, जनमत-संग्रह एंव वापस बुलाने का अधिकार समझते है। इन अधिकारो की

चर्चा संविधान में कर देनी चाहिए। ये अधिकार व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, परीक्षा एवं नियंत्रण पर आधारित है। आज जब आधुनिक देशों में तथाकथित लोकतंत्रीय यंत्र धनिक वर्ग के लोगों के लिए है, हम जिस प्रजातंत्र की स्थापना चाहते है, हम जनता का होगा। इस पर कुछ ही विशेषाधिकार युक्त लोगों का अधिकार न होगा। हम एक ऐसी लोकतांत्रिक पद्धति का विकास चाहते है जो रचनात्मक अवधि की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। केवल उन्ही लोगों को राजनीतिक अधिकार दिया जाना चाहिए जो गणतंत्र के प्रति-भक्ति-भावना प्रदर्शित करते है।

डॉ० सेनसिवटजरलैंड की प्रजातांत्रिक पद्धति में विश्वास करते थे। उनका विचार था कि जनता को उपक्रम, जनमत-संग्रह और वापस बुलाने का अधिकार

मिलना चाहिए। इसी सिद्धांत पर उन्होंने चीन में प्रजा तांत्रिक सरकार संगठित करने की कोशिश की। उनका कहना था कि जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण में राजमिस्त्री और मजदूरों के सहयोग की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सरकार के निर्माण में जनता का सहयोग अति आवश्यक है। शक्ति और योग्यता अलग अलग चीजें हैं। उसी प्रकार जनता की संप्रभुता शक्ति और (Sovereign Power of the people) और सरकार की शासन शक्ति (Ruling power of the government) अलग है। परंतु इसमें सतर्कता की आवश्यकता है क्योंकि सरकारी मशीन तभी अच्छी तरह चल सकती है जब चलाने वाले योग्य हो। शासन में ऐसे योग्य व्यक्ति का हृदय जनकल्याण होना चाहिए। अतः डॉ. सेन के अनुसार सच्ची लोकतांत्रिक व्यवस्था तक पहुँचने के पहले लोगों को निम्नलिखित तीन अवधियों से गुजरना होगा।

(क) सैन्य शासन की अवधि (A Period of Political tutelage)
इस अवधि में लोगों को शासन-संबंधी शिक्षा मिलेगी और ऐसे शिक्षित लोग ही सही अर्थ में जनता के लिए शासन करने में सफल होंगे। इस काल में एक कामचलाऊ संविधान (युएट-फा) या राजनीतिक संरक्षता शुन-चेंग की व्यवस्था होगी। इसकी अवधि छह वर्ष की होगी। इसमें जिला स्तर पर स्वायत्त शासन होगा। जनता स्थानीय सभाओं और कर्मचारियों को निर्वाचित करेगी। जिला प्रशासन और केन्द्रीय सैनिक शासन के संबंध एक आचार-संहिता द्वारा निर्धारित होंगे।

(ख) सैन्य शासन की अवधि (A Period of military operation)
यह तब तक आवश्यक रहेगा जब तक देश की सारी विरोधी शक्तियाँ दब न जाएँ और देश में पूर्ण रूप से शान्ति की स्थापना न हो जाए। यह अवधि सबसे

एनतः तीन वर्ष की होगी। इसके एकतंत्रीय राज्य का उन्मूलन, भ्रष्टाचार, कठोर दंड-विधान और करो का निवारण चोटी रखने, स्त्रियो का पैर बाँधने, अफीम सेवन, दास रखने और करो का निवारण देवी-देवताओं में अंधविश्वास रखने की कुप्रथाओं का निराकरण करना होगा। इसमे सारा शासन सेना के हाथ में रहेगा, किंतु इसके अंत में जिले के स्तर पर स्वायत्तता दी जायेगी।

(ग) संवैधानिक और लोकतांत्रिक सरकार की अवधि

(A Period of constitution and democratic goverment)

जब उपर्युक्त दोनों अवधियों से होकर देश के लोग गुजर जाएँगे, तब राष्ट्रीय पैमाने पर उन्हें शासन का अधिकार मिलेगा। इस अवधि में जनता द्वारा निर्वाचित राष्ट्रीय सभा एक संविधान तैयार करेगी। इसके द्वारा लोकतांत्रिक राज्य का गठन होगा तथा देश में संवैधानिक और लोकतांत्रिक

Scanned with CamScanner

सरकार की स्थापना होगी। जनता की संप्रभु होगी।
इस प्रकार डा० सेन की आस्था संवैधानिक लोकतांत्रिक
राज्य में थी। वे जनताकी संप्रभुता के समर्थक थे।
किंतु विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वे
सरकार को इतना अधिकार अवश्य देना चाहिए था कि
वह देश में शांति-व्यवस्था कायम रख सके। अतः
उनका प्रजातंत्र का सिद्धांत, लोकतंत्र पर सरकार की शक्ति
का अध्यारोपण (Superimposition of Sate authority
on democracy) था। यही कारण था कि उन्होंने सच्ची
प्रजातांत्रिक स्थिति तक पहुंचने के पहले सैनिकशासन
और राजनीतिक शिक्षा की आवधियों को आवश्यक
बतलाया। यह फ्रांस के इतिहास का सबक था क्योंकि
सहसा लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना से भीड़तंत्र आतंक
राज्य और साम्राज्यवाद के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाता
है।

Scanned with CamScanner

डॉ० सेन इनसे बचना चाहते थे।

③ आजीविका का सिद्धांत (Principle of Livelihood)

डॉ० सेन आजीविका सिद्धांत के प्रतिपादन में कार्ल मार्क्स के इतिहास की आर्थिक व्याख्या (Economic interpretation of history) से प्रभावित नहीं हुए थे, बल्कि चीन की तात्कालिक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था से प्रभावित हुए। उनका विश्वास था कि मार्क्सवादी नैतिक सिद्धांत और तत्सम्बंधी वर्ग-संघर्ष समकालीन चीन की स्थिति के लिए लागू नहीं हो सकता था। डॉ० सेन ने चीन में भोजन की जटिल समस्या पर ध्यान दिया और उसे हल करने की चेष्टा की। इस दृष्टिकोण से उन्हें मार्क्सवादी नहीं अपितु समाज सुधारक कहा जा सकता है। उनका कहना था कि सबों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी लोगों को सामूहिक रूप से प्रयत्न करना चाहिए।

Scanned with CamScanner